SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और सुभद्रा कुमारी चौहानः एक ऐतिहासिक अवलोकन

डी. एन. खुटे, Ph.D., इतिहास अध्ययन शाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
डी. एन. खुटे, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/10/2023
Revised on : -----
Accepted on : 25/10/2023
Plagiarism : 00% on 18/10/2023

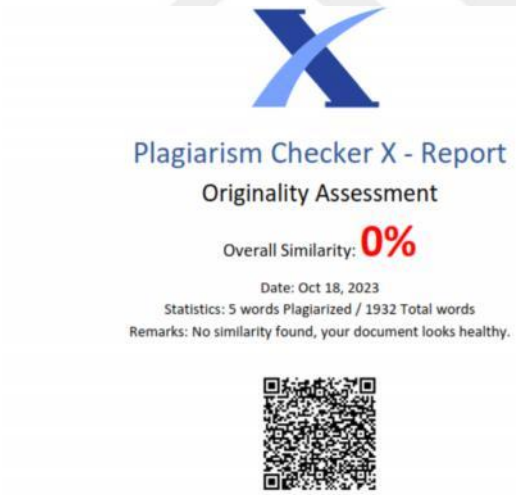

शोध सार

भारतीय राजनीति में गांधी जी के प्रादुर्भाव से एक नया अध्याय आरंभ हुआ। लोग गांधीजी के कार्यक्रमों– ग्राम स्वराज, कुटीर उद्योग, चरखा और तदुपरांत अछूतोद्धार इत्यादि से जुड़ते गए और देश में राष्ट्रीयता की एक नई सकारात्मक चेतना का प्रसार हुआ। गांधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन को जनसाधारण तक पहुंचा कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को सामान्य व्यक्ति की लड़ाई बना दिया। उनके नेतृत्व में सभी वर्गों, व्यवसायों और सम्प्रदायों के व्यक्तियों ने आंदोलन में भाग लिया। सुभद्रा कुमारी चौहान भी गांधीजी से काफी प्रभावित रहीं तथा उनके साथ आंदोलन में शामिल हो गई। जनजागरण के इस महायज्ञ में सुभद्रा कुमारी चौहान की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता। सुभद्रा कुमारी चौहान कवयित्री होने के साथ–साथ हमारे स्वतंत्रता संग्राम की योद्धा भी थी और उनका जीवन घर से कारागार और कारागार से घर जाने में ही बीता।

मुख्य शब्द

साम्राज्यवाद, उपनिवेश, कवयित्री, असहयोग आंदोलन, बिखरे मोती.

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन साम्राज्यवाद और उपनिवेशी शोषण के विरूद्ध जनजागरण का परिणाम था। ब्रिटिश शासकों की दमनकारी नीतियों के विरोध में सन् 1857 में महान क्रांति का बिगुल बजा था। नवजागरण की यह चेतना देशव्यापी थी। इस व्यापक जनजागरण को नई गति और नई दिशा देने में देश के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, समाज सुधारकों, कवियों, शायरों, भजनोपदेशकों और लोकगायको का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद देश में नई सोच के साथ दृष्टिकोण में परिवर्तन आना शुरू हुआ। कुछ समय के बाद देश के लोगों में

स्वशासन के लिये अंग्रेजी शासन से मांग की जाने लगी। गरम दल के नेताओं ने पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करने लगे तथा राष्ट्रीयता के प्रसार के लिये विभिन्न कार्यक्रम अपनाये। भारतीय राजनीति में गांधी जी के प्रादुर्भाव से एक नया अध्याय आरंभ हुआ। लोग गांधीजी के कार्यक्रमों– ग्राम स्वराज, कुटीर उद्योग, चरखा और तदुपरांत अछूतोद्धार इत्यादि से जुड़ते गए और देश में राष्ट्रीयता की एक नई सकारात्मक चेतना का प्रसार हुआ। गांधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन को जनसाधारण तक पहुंचा कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को सामान्य व्यक्ति की लड़ाई बना दिया। उनके नेतृत्व में सभी वर्गों, व्यवसायों और सम्प्रदायों के व्यक्तियों ने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया। सुभद्रा कुमारी चौहान भी गांधीजी से काफी प्रभावित रहीं तथा उनके साथ शामिल हो गई। जनजागरण के इस महायज्ञ में सुभद्रा कुमारी चौहान की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता। सुभद्रा कुमारी चौहान कवयित्री होने के साथ–साथ हमारे स्वतंत्रता संग्राम की योद्धा भी थी और उनका जीवन, घर से कारागार और कारागार से घर जाने में ही बीता।

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 1905 में प्रयाग में हुआ इनके पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह और माता सिंहनी परिवार की थी सुभद्रा कुमारी चौहान, चार बहनें और दो भाई थे। आठवीं कक्षा तक की शिक्षा भी उन्होंने कास्थवेट गर्ल्स स्कूल प्रयाग (इलाहाबाद) से प्राप्त की, कास्थवेट गर्ल्स स्कूल में महादेवी वर्मा उनकी जूनियर और सहेली थीं। 15 वर्ष की अल्पायु में ही सुभद्रा कुमारी चौहान का विवाह खंडवा, मध्यप्रदेश निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान से 6 अप्रेल 1919 को हुआ।[1] विवाह के बाद वे जबलपुर आ गई थी।

विवाह के समय देश में रोलेट एक्ट और जलियांवाला बाग हत्याकांड की घटना का सुभद्रा जी के मन मस्तिष्क पर इतना प्रभाव पड़ा कि वे स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय सहयोग दिये। 1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थी। वे दो बार जेल भी गई थीं। वे हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं। झांसी की रानी उनकी प्रसिद्ध कविता है। वे राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रहीं है। उन्होंने अपने गीतों में युवकों को स्वतंत्रता के लिये मर मिटने का आह्वान किया। वे बहन के रूप में अपने देश के भाईयों को चुनौती देती हुई कहती हैः

आते हो भाई! पुनः पूछती हूँ
विषमता के बंधन की है लाज तुमको,
तो बंदी बनो, देखो बंधन है कैसा?
चुनौती यह राखी की है आज तुमको।[2]

सुभद्रा कुमारी के पति ठाकुर लक्ष्मण सिंह एक सच्चे देशभक्त थे। उन्होंने असहयोग आंदोलन के समय देश की आजादी के लिये वकालत छोड़ दी और सुभद्रा जी को साथ लेकर जबलपुर आ गये तथा दोनों सक्रिय रूप से राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेने लगे। लक्ष्मण सिंह चौहान क्षेत्र के प्रमुख गांधीवादी नेता एवं कुशल संगठनकर्ता थे। वे प्रांतीय कांग्रेस के मंत्री, जिला और शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा हरिजन सेवक संघ के प्रांतीय अध्यक्ष भी थे।[3] सुभद्रा कुमारी को महात्मा गांधी की अहिंसा की नीति का पालन करते हुए सत्याग्रह पर अटल विश्वास था। वे तिलक स्वराज फंड के लिए चंदा एकत्र करती और कांग्रेस कार्यक्रमों का प्रचार करती थी। दूसरी ओर उनकी कलम राष्ट्रवादी घटनाओं को प्रस्तुत कराती, ब्रिटिश शासन की नीतियों पर हथौड़ा मारती थी। साहित्य में वह शक्ति है जो तीर, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं है। वह मुर्दों में भी जान डाल सकती है। इस दृष्टि से सुभद्रा जी का काव्य वीरत्व और ओज का काव्य है। उनका काव्य रचना देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत है।

सन् 1857 की क्रांति और देशव्यापी आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में झांसी की रानी कविता में कवयित्री के उद्‌गार हैः

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी
दूर फिरंगी को करने की, सबने मन में ठानी थी।[4]

असहयोग आंदोलन के दौरान माखनलाल चतुर्वेदी जी के जेल जाने पर सुभद्रा कुमारी ने लिखी थीः

सदियों सोई हुई वीरता जागी, मैं भी वीर बनी।
जाओं भैया, बिदा तुम्हें करती हूँ मैं गंभीर बनी।
याद भूल जाना मेरी, उस आंसूवाली मुद्रा की।
कर लो अब स्वीकार बधाई, छोटी बहन सुभद्रा की।

उत्तर प्रदेश में 1922 की चौरी चौरा की दुखद घटना हुई जिसमें 21 पुलिस जवानों की हत्या हो गई जिसके कारण महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया। इस निर्णय से अनेक राष्ट्रीय नेता अत्यंत क्षुब्ध हुए।

राष्ट्रीय झंडे के प्रति सम्मान की भावना पैदा करने के विचार से ब्रिटिश सरकार को चुनौती देने के लिए झंडा सत्याग्रह का एक प्रारूप पं. सुन्दर लाल ने जबलपुर में अपने सहकर्मियों के सामने रखा। पहला व्यक्ति जिसने इस योजना का दिल खोल कर स्वागत किया वह सुभद्रा कुमारी चौहान थी। 1923 में जबलपुर में म्युनिसिपल कमेटी में कांग्रेस का बहुमत होने पर हकीम अजमल खां के हाथों झंडा फहराने की योजना बनाई। जब वे 18 मार्च 1923 को जबलपुर आये और नगर पालिका भवन पर तिरंगा झंडा फहराया। यूरोपियन डिप्टी कमिश्नर ने अत्यंत क्रुद्ध हो कर भारतीय तिरंगे झंडे को उतारने का आदेश देकर उसे पैरो तले कुचला भी। इससे तत्काल ही वहां पर रोषयुक्त आन्दोलन फूट पड़ा।[5] जिला कांग्रेस समिति जबलपुर ने तुरंत ही सत्याग्रह प्रारंभ किया और डिप्टी कमिश्नर के आदेशों का उल्लंघन करते हुए पंडित सुंदरलाल, सुभद्रा कुमारी चौहान, नाथूराम मोदी और कुछ स्वयं सेवकों ने एक जुलूस निकाला जिसे पुलिस ने रोक लिया तथा समस्त नेताओं को गिरफ्तार कर लिया जिसके विरोध में जबलपुर नगरपालिका के सभी सदस्यों ने एक साथ त्याग पत्र दे दिए। पंडित सुंदरलाल पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें 6 माह के कारावास का दंड भी दिया गया।[6]

नागपुर कांग्रेस समिति ने इस चुनौती पर संघर्ष प्रारंभ किया। जमनालाल बजाज ने सत्याग्रह प्रारंभ करने हेतु 13 अप्रेल 1923 को चुना। इसी बीच प्रशासन ने समस्त नगर पालिकाओं और जिला परिषदों को परिपत्र जारी कर दिए कि अपने–अपने भवनों पर राष्ट्रीय झंडा न फहराने की अनुदेश दिए।[7] मध्य प्रांत और बरार के तत्कालीन समाचार पत्रों में जबलपुर नगर पालिका के साहस की प्रशंसा करते हुए उसे बधाई दी।[8]

नागपुर में भी झंडा सत्याग्रह शुरू हुआ जिसका नेतृत्व सरदार पटेल ने किया। इसमें सम्मिलित होने के लिए जबलपुर से तीन जत्थों को रवाना किया गया जिनका नेतृत्व पंडित विश्वंभर नाथ पांडे, माखनलाल चतुर्वेदी तथा सुभद्रा कुमारी चौहान ने किया था। वहां पहुंचने पर इन सभी को गिरफ्तार कर लिया गया। यह आंदोलन 110 दिनों तक चला था। सुभद्रा कुमारी चौहान भारत की पहली महिला सत्याग्रही थी जिन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। श्रीमती चौहान की गिरफ्तारी से अभिभूत होकर राजगोपालाचारी ने नागपुर की सभा में उनकी खूब प्रशंसा में कहा– सुभद्रा देवी का यह वीरता पूर्वक कार्य भारत के प्रत्येक घर में सुना और सराहा जाएगा तथा यंगइंडिया के लेख में अपने भाव इस प्रकार व्यक्त किये – अपनी छोटी कमसिन उम्र के बहन ने हम सभी को एक राह दिखाई है। यह राह थी झंडा सत्याग्रह में महिलाओं की सहभागिता की। एक बार पुनः सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने कृतित्व से भारत की उन तमाम महिलाओं को यह संकेत दिया कि वह भी पुरुषों के ही समान है और साहस तथा बलिदान की मूर्ति हैं। अपने छोटे से कार्य अवधि में झंडा सत्याग्रह से नगर के चिंतन उसके दर्शन का भारत को आभास करा दिया था। इसके साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन की कुछ नवीन तेवर भी उपलब्ध कराए थे जिसमें प्रमुख तेवर सुभद्रा कुमारी चौहान का था।[9]

इस बीच सुभद्रा कुमारी चौहान निरंतर अपनी लेखनी चलाती रही। उनका प्रथम काव्य संकलन मुकुल 1930 में तथा पहला कहानी संग्रह बिखरे मोती 1932 में और जन्मादनी 1934 एवं सीधे सादे चित्र 1947 में प्रकाशित हुआ। इन काव्य तथा कहानियों में नारी जाति के समर्पण तथा निश्चल प्रेम की गाथा है साथ ही स्वाभिमान, राष्ट्रीयता तथा मानवता की भावना से ओतप्रोत है। 1932 में ही उन्हें सेकसरिया पुरस्कार बिखरे मोती संग्रह के लिए मिला। सुभद्रा

जी का साहित्यिक व्यक्तित्व एक क्रांति की उद्घोषणा करता है। उनमें विरोध का स्वर प्रबल है चाहे कविताएं हो या कहानी दोनों में उनकी चेतना का अविरल प्रवाह सतत् प्रवाहित होता हैं।[10]

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति पूर्ण निष्ठावान बनी रही। 1940 में प्रारंभ हुए व्यक्तिगत सत्याग्रह में उन्होंने अनेक स्थानों पर घूम घूम कर युद्ध विरोधी प्रचार किए तथा जनवरी 1941 में उन्हें गिरफ्तार किया गया। उन्हें तीसरी बार गिरफ्तार भारत छोड़ो आंदोलन के समय किया गया। इस प्रकार 1 वर्ष से अधिक का समय ब्रिटिश भारतीय जेल में उन्होंने स्वतंत्रता सैनिक के रूप में बिताया।[11]

कहा जाता है जीवन कितना गुजारा यह महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि कैसे गुजारा यह अधिक महत्वपूर्ण है। 15 फरवरी 1948 को मात्र 44 वर्ष की आयु में नागपुर, जबलपुर राष्ट्रीय मार्ग सिवनी से कुछ पहले एक स्थान पर उनकी मोटर दुर्घटना में दुखद मृत्यु हो गई।[12] भारतीय डाकघर विभाग ने 6 अगस्त 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक–टिकट जारी किया है।

निष्कर्ष

इस तरह सुभद्रा कुमारी चौहान साहित्य सृजन तथा राष्ट्र के लिए त्याग की इतनी सुगंध बिखेर गई कि आज तक हम उन्हें इतने सम्मान से याद कर रहे हैं। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी भावनाओं की आहुति देने वाली, देश को झकझोर के रख देने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान का योगदान सचमुच किसी भी अन्य सेनानी के योगदान से एक दम भिन्न व एकदम अद्भुत है– जैसी कि वे स्वयं थी। सुभद्रा जी के झांसी की रानी कविता में रानी लक्ष्मीबाई ने जो पथ दिखाया और जो सीख दी उस का देशवासियों को अनुसरण करना चाहिए।

हमको जीवित करने आई, बन स्वतंत्रता–नारी थी।
दिखा गई पथ, सिखा गई हमको, जो सीख सिखानी थी।

संदर्भ सूची

1. मिश्रा, जयप्रकाश एवं अन्य (संपादक), (2008) *इतिहास में अंकित सुभद्रा की स्मृतियां,* रिसर्च इंडिया नई दिल्ली, पृ. 3।
2. शुक्ल, कृष्ण शंकर, (1934) *आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास,* हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस।
3. *मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक,* खंड 1, जबलपुर संभाग सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, म.प्र. शासन भोपाल, पृ.104.।
4. चौहान सुभद्रा कुमारी, *झांसी की रानी*।
5. होम पोलिटिकल फाईल नं. 280, 18 अगस्त 1923 पृ.18।
6. वही, पृ. 55।
7. मिश्रा, डी.पी. (संपादक), (2002) *मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास,* स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग, भोपाल (पुनर्मुद्रित) पृ. 321।
8. होम पोलिटिकल फाईल नं. 280, 18 अगस्त 1923, पृ. 23।
9. मिश्रा, जयप्रकाश एवं अन्य (संपादक), इतिहास में अंकित सुभद्रा की स्मृतियां, पूर्वोक्त, पृ. 150।
10. वही, पृ. 204।
11. गुप्त, रामेश्वर प्रसाद एवं शुक्ला, शंकर लाल, (1985) स्वतंत्रता संग्राम और जबलपुर नगर, जबलपुर नगर स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ जबलपुर, पृ. 18।
12. त्रिपाठी हरिशंकर (संपादक), (1999) *जबलपुर की काव्य धारा,* पद्मभूषण पं. कुंजीलाल दुबे स्मारक समिति जबलपुर, पृ. 203।

****